بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक**02.06.2017** मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

रमज़ान का हमारी ज़िन्दगियों में आना और अल्लाह तआला का यह फ़रमाना कि रमज़ान इस लिए आता है कि तुम तक़्वा धारण करो और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह फ़रमाना कि इस सिलसिले को अल्लाह तआला ने तक़्वा के लिए ही क़ायम किया है जो हम पर बड़ी ज़िम्मेदारी डालता है कि हम हर समय अपनी अवस्थाओं के निरीक्षण करते रहें और अल्लाह तआला ने जो ये विशेष कृपा के दिन रखे हुए हैं इनमें अपने भीतर ऐसा बदलाव पैदा करें और अपने तक़्वा के स्तरों को ऐसा बढ़ाने का प्रयास करें जो ख़ुदा तआला हमसे चाहता है।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ۔

हे वे लोगो, जो ईमान लाए हो तुम पर रोज़े उसी प्रकार फ़र्ज़ कर दिए गए हैं जिस प्रकार तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम तक़्वा धारण करो।

अलहमदु लिल्लाह कि हमें अपने जीवन में एक और रमज़ान का महीना गुज़ारना नसीब हो रहा है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- यक़ीनन जन्नत को रमज़ान के लिए साल के आरम्भ से अन्त तक सजाया जाता है। इसी प्रकार एक अन्य रिवायत में है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस व्यक्ति ने रमज़ान के रोज़े ईमान की हालत में और अपनी आत्मा का निरीक्षण करते हुए रखे उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिए जाएँगे और यदि तुम्हें मालूम होता कि रमज़ान की क्या क्या फ़ज़ीलतें हैं तो तुम ज़रूर इस बात के इच्छुक होते कि पूरे वर्ष ही रमज़ान हो।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो दूसरी हदीस है इसमें स्पष्ट रूप से फ़रमा दिया कि ईमान की हालत में रोज़ा रखने तथा अपनी आत्मा की शुद्धि करते हुए रमज़ान पूरा करने से यह स्तर मिलता है और जब यह हालत होगी तो तभी पिछले गुनाह भी क्षमा होते हैं, इंसान ईमान में प्रगति करता है, अपनी आत्मा का निरीक्षण करता है, अपनी दुर्बलताओं को देखता है, अपने कर्मों को देखता है, अल्लाह और उसके बन्दों के अधिकारों को अदा पर विचार करता है, अपने कर्मों को अल्लाह तआला की प्रसन्नता के अुनसार पूरा करने का प्रयास करता है तो तभी पापों की माफ़ी भी होती है और यही उद्देश्य रमज़ान के रोज़ों के द्वारा प्राप्त करने का अल्लाह तआला ने क़ुर्आन-ए-करीम में भी बयान फ़रमाया है। इस आयत में जो मैंने तिलावत की है कि तुम पर रोज़े इस लिए फ़र्ज़ किए गए ताकि तुम तक़्वा वाले बन जाओ और तक़्वा यही है कि हर काम ख़ुदा तआला की प्रसन्नता के लिए हो तभी तुम रोज़ों से लाभान्वित हो सकते हो और शैतान के हमलों से बच सकते हो, अन्यथा शैतान की यह खुली चुनौती है कि तनिक इंसान अल्लाह तआला की शरण से हटा तो तुरन्त उसे शैतान ने दबोचा। अतः ईमान में प्रगति तथा आत्मनिरीक्षण ही इंसान को अल्लाह तआला की शरण का भागीदार बनाता है और यह तभी हो सकता है जब इंसान तक़्वा पर चलने वाला हो।

ईमान की हालत तथा स्तर, और तक़्वा की हालत तथा स्तर क्या होने चाहिएँ और ये किस प्रकार प्राप्त हो सकते हैं, इसके बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें बताया कि ईमान की हालत उस समय तक नहीं हो सकती जब तक कि .

ख़ुदा तआला की पहचान न हो। आपने फ़रमाया कि भारी मार्ग जो हमने तय करना है, वह ख़ुदा की पहचान है, उसको पहचानना है और यदि हमारी ख़ुदा शनासी ही त्रूटि पूर्ण, सन्देह पूर्ण और धुन्धली है तो हमारा ईमान कदाचित प्रकाश्मयी और चमकीला नहीं हो सकता। और ख़ुदा शनासी किस प्रकार होगी? यह अल्लाह तआला की दया की विशेषता के जलवे होगी। ऐसा सम्बंध ख़ुदा तआला से पैदा करने से होगा जिसमें ख़ुदा तआला की कृपा और दया और क़ुदरत के गुण हमारे अनुभव में आएँगे और ये बातें उस समय अनुभव की जा सकती हैं जब ख़ुदा की इबादत और उससे सम्बंध की विशेष अभिव्यक्ति हो रही हो। आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला की दया, कृपा और क़ुदरत के गुण जब अनुभव होते हैं तो फिर वे मानसिक कुभावनाओं से छुड़ाते हैं और मानिसक कुधारणाएँ, ईमान और विश्वास की दुर्बलता के कारण पैदा होती हैं। यदि ईमान कमज़ोर न हो और अल्लाह तआला पर पूर्ण विश्वास हो तो मानसिक कुधारणाएँ पैदा नहीं होतीं। आपने फ़रमाया कि इस दुनया की समृद्धि, इसकी सम्पत्ति, इसका धन जितना मनुष्य को प्यारा है उतनी आख़िरत के जीवन की नेअमतें उसको प्यारी नहीं, क्यूँकि यदि आख़िरत की ज़िन्दगी की नेअमतें भी इतना ही प्यारी होतीं तो फिर इनको प्राप्त करने के लिए भी इतनी ही कोशिश होती जितनी इन दुनया की चीज़ों की प्राप्ति के लिए होती है, बल्कि इससे बढ़कर होती। अतः स्पष्ट हुआ कि अल्लाह तआला की क़ुदरत और दया और वादों पर वास्तविक ईमान नहीं है और इस बात का निरीक्षण करने की ज़रुरत है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इस स्पष्टीकरण के पश्चात यह बात अच्छी प्रकार समझ में आ सकती है कि ईमान कोई छोटी बात नहीं है, यह बहुत बड़ी चीज़ है, एक अत्यधिक बड़ा टार्गेट है जो हमें दिया गया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि बात यह है कि ख़ुदा तआला पर ईमान दो प्रकार का है। एक वह ईमान है जो केवल ज़बान तक सीमित है और इसका प्रभाव उसके कर्मों एवं कथनों पर कुछ नहीं होता। दूसरी प्रकार ईमान बिल्लाह की यह है कि कर्मों की गवाहियाँ उसके साथ हों। अतः जब तक यह दूसरी प्रकार का ईमान पैदा न हो, मैं नहीं कह सकता कि एक आदमी ख़ुदा को मानता है। यह बात मेरी समझ में नहीं आती कि एक व्यक्ति अल्लाह तआला को मानता भी हो और फिर गुनाह भी करता हो। दुनया का बड़ा भाग पहली प्रकार के मानने वालों का है। मैं जानता हूँ कि वे लोग स्वीकार करते हैं कि हम ख़ुदा को मानते हैं परन्तु साथ ही वे गन्दगी में लिप्त तथा पाप के अन्धकार से घिरे हैं। फ़रमाया- फिर वह क्या बात है कि वह गुण जो ईमान बिल्लाह की विशेषता है वह उसको प्रत्यक्ष एवं हर समय देखने वाला मानकर पैदा नहीं होता? फ़रमाया कि मनुष्य की प्रकृति में यह बात विद्यमान है कि वह जिस चीज़ पर आस्था करता है उसकी हानि से बचने तथा उसके लाभ को लेना चाहता है। देखो सन्खिया एक ज़हर है और इंसान जबकि इस बात का ज्ञान रखता है कि उसकी एक रत्ती (थोड़ी सी मात्रा) भी विनाश करने को पर्याप्त है तो कभी वह उसको खाने के लिए दलेरी नहीं करता, इस लिए कि वह जानता है कि इसका खाना विनाश होना है फिर क्यूँ वह ख़ुदा तआला को मानकर उन बातों को पैदा नहीं करता जो ईमान बिल्लाह की हैं। फ़रमाया- यदि सन्खिया के बराबर भी अल्लाह तआला पर ईमान हो तो उसकी भावनाओं तथा इच्छाओं पर मौत आ जावे, किन्तु नहीं। अतः पहल कर्त्तव्य इंसान का यह है कि वह अपने उस ईमान को ठीक करे जो वह अल्लाह पर रखता है अर्थात उसको अपने कर्मों के द्वारा प्रमणित करके दिखाए कि कोई ऐसा काम उससे न हो जो अल्लाह तआला की शान तथा उसके आदेशों के विरुद्ध हो।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः यह है एक मोमिन के आत्मनिरीक्षण का तरीक़, रमज़ान के महीने में एक विशेष माहौल बना होता है तथा इबादतों और नेकियों की ओर ध्यान पैदा हो रहा होता है। ऐसे माहौल में इबादतों और नेकियों की ओर ध्यान केन्द्रित करते हुए, अपने कर्मों की ओर ध्यान करते हुए, हमें अपने ख़ुदा के आगे झुकते हुए, पिछले गुनाहों की माफ़ी मांगनी चाहिए और फिर इस रमज़ान को भविष्य के जीवन का अटूट अंग बना लेना चाहिए।

जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया कि ईमान की हालत और आत्मनिरीक्षण करते हुए रमज़ान गुज़ारो तो इसका अर्थ ही यह है कि तक़्वा में प्रगति करते हुए अपनी हालतों को अल्लाह तआला की प्रसन्नता के आधीन करते हुए ये दिन गुज़ारो और यदि इसमें सफलता मिल गई तो फिर तक़्वा जीवन का अभिन्न अंश बन जाएगा। अपने कर्मों को इंसान केवल रमज़ान के महीने में ही ठीक नहीं करेगा अपतु यह कृपा सदैव के लिए जारी कृपा होगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस ओर हमें ध्यान दिलाते हुए फ़रमाया कि क़ुर्आन और इस्लाम की शिक्षा का उद्देश्य तो तक़्वा पैदा करना था,

वही आज हमें नज़र नहीं आता, रोज़े रखते हैं नमाज़ें पढ़ते हैं लेकिन तक़्वा से वंचित होने के कारण यही नमाज़ें और रोज़े उन्हें पापी बना रहे हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इस्लाम के नाम पर जो आजकल हम देखते हैं आतंकवाद हो रहा है, निर्दोषों की हत्या की जा रही है यह इस लिए है कि तक़्वा नहीं रहा। ऐसे लोगों को रमज़ान किस प्रकार लाभ दे सकता है जो तक़्वा से वंचित हैं, जो अल्लाह और रसूल के नाम पर अत्याचार करते हैं वे कभी रमज़ान से लाभ प्राप्त करने वाले नहीं हो सकते बल्कि अल्लाह तआला की पकड़ में आने वाले हैं। अतः ऐसे समय में जब अत्याचार तथा विनाश की ये घटनाएँ सुनते हैं और देखते हैं तो हम अहमदियों को पहले से बढ़कर इस्तिग़फ़ार करते हुए, अल्लाह तआला की स्तुति करते हुए कि उसने हमें इन अत्याचारियों से अलग करके हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई, अपनी गतिविधियों पर नज़र रखनी चाहिए, अपने ईमान की मज़बूती की चिंता करनी चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- ईमान की जड़ तक़्वा और पवित्रता है उसी से ईमान शुरु होता है और उसी से इसकी सिंचाई होती है तथा मानसिक प्रवृत्तियाँ दबती हैं। अतः आपके इस कथन से यह बात और अधिक खुल गई कि ईमान तक़्वा के बिना पैदा हो ही नहीं सकता और न केवल यह ईमान की जड़ तक़्वा है बल्कि ईमान की सुरक्षा तथा प्रगति भी ईमान के बिना नहीं हो सकती। तक़्वा होगा तो कर्म नेक होंगे और कर्म नेक होंगे और अल्लाह तआला की प्रसन्नतानुसार होंगे तो ईमान में प्रगति उत्पन्न होगी। इसके द्वारा यह भी स्पष्ट हो गया कि रमज़ान की फ़ज़ीलत के फल भी तक़्वा में बढ़े बिना प्राप्त नहीं हो सकते। तक़्वा बढ़ेगा तो ईमान बढ़ेगा, आत्मनिरीक्षण की ओर ध्यान होगा और जब आत्मनिरीक्षण की ओर ध्यान होगा, अपना निरीक्षण इंसान करेगा तो मानसिक प्रवृत्तियाँ भी फिर दबेंगी और मानसिक प्रवृत्तियों का दबना ही अल्लाह तआला के आदेशानुसार काम करते हुए उसकी निकटता प्रदान करता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि वास्तविक तक़्वा जिससे इंसान धोया जाता है और साफ़ होता है और जिसके लिए नबी आते हैं, वह दुनया से उठ गया है। पवित्रता एवं विशुद्धता उत्तम चीज़ है। मनुष्य पाक और पवित्र हो तो फ़रिश्ते उससे हाथ मिलाते हैं। लोगों में इस बात का महत्त्व नहीं है अन्यथा उनके आनन्द की प्रत्येक चीज़ हलाल साधनों से उनको मिले। आपने फ़रमाया कि हदीस में आया है कि चोर चोरी नहीं करता जब कोई मोमिन हो, यह बिल्कुल सच्ची बात है, बकरी के सिर पर यदि शेर हो तो उसको हलाल खाना भी भूल जाता है बजाए इसके कि वह किसी दूसरे के खेत में जाए। इसी प्रकार यदि ख़ुदा तआला का भय हो तो सम्भव नहीं कि गुनाह करे। फ़रमाते हैं कि असल जड़ और लक्ष्य तक़्वा ही है जिसे वह वरदान मिला तो सब कुछ पा सकता है बिना इसके सम्भव नहीं कि इंसान छोटे या बड़े गुनाहों से बच सके। फ़रमाया कि इंसान अपने आपको अकेला जानकर गुनाह करता है, जब अकेला समझता तो ज़ाहिर है वह समझता है कि ख़ुदा नहीं मुझे देख रहा तो अर्थ यह है कि वह नास्तिक होता है उस समय और यह विचार नहीं करता कि मेरा ख़ुदा मेरे साथ है वह मुझे देखता है। अन्यथा यदि वह यह समझता तो कभी पाप न करता। फ़रमाते हैं कि प्रत्येक बात तक़्वा पर ही आधारित है, क़ुर्आन ने इसी से आरम्भ किया है। इय्याका नअबुदु व इय्याका नस्तअीन का अभिप्रायः भी तक़्वा है कि इंसान यदि अमल करता है किन्तु भय के कारण साहस नहीं करता कि उसे अपने से सम्बंधित करे और उसे ख़ुदा की सहायता समझता है और इय्याका नस्तअीन कह देता है कि यह इबादत जो है यह भी तेरी सहायता के कारण ही हो रही है। तू सामर्थ्य दे रहा है तो इबादत हो रही है अन्यथा यह इबादत नहीं हो सकती और फिर आगे के लिए भी सहायता मांगता है कि भविष्य में भी अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे कि इबादत की तौफ़ीक़ मिलती रहे। अतः यह है स्तर तक़्वा का। फिर फ़रमाया कि दूसरी सूरत भी हुदललिल मुत्तक़ीन से शुरु होती है। आप अलै. फ़रमाते हैं कि नमाज़ रोज़ा जक़ात इत्यादि सब उसी समय क़बूल होता है जब इंसान मुत्तक़ी हो। इस प्रकार यदि तक़्वा होगा तो ये चीज़ें क़बूल होंगी, यदि तक़्वा नहीं तो ये चीज़ें भी स्वीकार करने योग्य नहीं। आप अलै. फ़रमाते हैं क़ुर्आन शरीफ़ में यह आयत है कि إِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ۳۱ फ़रमाते हैं कि इससे भी अभिप्रायः मुत्तक़ी हैं अर्थात वे लोग जिन्होंने कहा कि अल्लाह हमारा रब्ब है और फिर दृढ़ संकल्प होकर इस विश्वास पर क़ायम हो गए कि अल्लाह हमारा रब्ब है, वही हमारी समस्त आवश्यकताओं को पूरा करने वाला है, वही पालने वाला है। उन पर फ़रिश्ते उतरेंगे यह कहते हुए कि डरो नहीं और जो तुम्हारे पिछले काम हैं उनके कारण भी भयभीत न हों क्यूँकि अब तुमने तक़्वा धारण कर लिया

है। फिर आगे है कि نحن اولیاء کم فی الحیو ۃ الدنیا و فی الاٰخرہ अर्थात दुनया और आख़िरत में हम तुम्हारे वली और संरक्षक हैं।

इस प्रकार अल्लाह तआला पापों को क्षमा करता है नेकियों में दृढ़ संकल्प रहने वालों के और फिर यही नहीं बल्कि उन्हें दुनया की नेअमतों से भी लाभान्वित करता है तथा आख़िरत में वली और संरक्षक होता है। कितने भाग्यशाली हममें से वे जो रमज़ान में अपनी हालतों को बदलते हुए दृढ़ निश्चय पूर्वक अल्लाह तआला के आदेशानुसार अपने जीवन व्यतीत करने वाले हैं तथा इस प्रयास में हैं अपने अपने जीवन व्यतीत करें।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अल्लाह तआला हमें मुत्तक़ी बनाना चाहता है ताकि उसकी अत्यंत कृपाओं के द्वार हम पर खुलें और रमज़ान में विशेष रूप से अपनी कृपाओं के द्वार तक़्वा धारण करने वालों के लिए वह खोलता है। मुत्तक़ी बनने के लिए न केवल बुराईयों को त्यागना है बल्कि नेकियाँ भी धारण करनी हैं। इसको विस्तार पूर्वक बयान करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मुत्तक़ी बनने के लिए यह अनिवार्य है कि इसके पश्चात कि मोटी बातों जैसे व्यभिचार, चोरी, अधिकारों का हनन, दिखावा, घृणा, कंजूसी इत्यादि को त्यागने में पक्का हो तो बुरे आचरण से बचकर उनकी तुलना में अच्छे आचरण में प्रगति करे। लोगों के साथ सद्भावना, प्रसन्नचित, सहानुभूति की भावना के साथ पेश आए। ख़ुदा तआला के साथ सच्ची वफ़ा और सच्चाई दिखलावे। सेवाओं के उच्च एवं प्रशंसनीय स्तर तलाश करे। इन बातों से इंसान मुत्तक़ी कहलाता है और जो लोग इन बातों में निपुण होते हैं वही वास्तव में मुत्तक़ी होते हैं अर्थात यदि एक एक विशेषता अलग अलग किसी में हो तो उसे मुत्तक़ी न कहेंगे जब तक संयुक्त रूप से अच्छे आचरण उसमें न हों और ऐसे ही व्यक्ति के लिए لا خوف علیھم ولا ھم یحزنون है और इसके बाद उनको क्या चाहिए, अल्लाह तआला ऐसों का मुतवल्ली हो जाता है जैसे कि वह फ़रमाता है وھو یتولی الصالحین

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- जो लोग केवल बैअत करके यह चाहते हैं कि ख़ुदा की पकड़ से बच जाएँ वे ग़लती करते हैं, उनको नफ़्स ने धोखा दिया है। देखो वैद्य जिस वज़न तक मरीज़ को दवा पिलानी चाहता है यदि वह उस हद तक न पीवे तो स्वस्थ होने की आशा रखना व्यर्थ है। अतः उस हद तक सफ़ाई करो और अल्लाह के नाराज़ होने का भय धारण करो जो ख़ुदा के प्रकोप से बचाने वाला होता है। फ़रमाया- अल्लाह तआला पश्चाताप करने वालों पर रहम करता है क्यूँकि यदि ऐसा न होता तो दुनया में अंधेर पड़ जाता। फ़रमाया कि इंसान जब अल्लाह की नाराज़गी से डरने लगता है तो ख़ुदा तआला उसमें और उसके ग़ैर में अन्तर रख देता है। आप फ़रमाते हैं कि हमारी जमाअत को डरना चाहिए। यदि किसी में तक़्वा हो जैसा कि ख़ुदा तआला चाहता है, तो वह बचाया जाएगा। इस सिलसिले को ख़ुदा तआला ने तक़्वे के लिए ही स्थापित किया है क्यूँकि तक़्वा का मैदान बिल्कुल ख़ाली है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः एक और रमज़ान का हमारे जीवन में आना और अल्लाह तआला का यह फ़रमाना कि रमज़ान इस लिए आता है कि तुम तक़्वा धारण करो और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह फ़रमाना कि इस सिलसिले को अल्लाह तआला ने तक़्वे के लिए ही क़ायम किया है हम पर बड़ा भारी दायित्व डालता है कि हम हर समय अपनी हालतों के निरीक्षण करते रहें तथा अल्लाह तआला ने जो ये विशेष कृपा के दिन रखे हुए हैं उनमें अपने अन्दर ऐसे बदलाव पैदा करें और अपने तक़्वा के स्तरों को ऐसा बढ़ाने का प्रयास करें जो ख़ुदा तआला हमसे चाहता है और फिर केवल रमज़ान तक ही सीमित न रहें बल्कि अपने जीवन को इसका अंश बना लें। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर अनवर ने मुकर्रम ख़्वाजा अहमद हुसैन साहब दर्वेश क़ादियान की नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब पढ़ने का ऐलान फ़रमाया तथा आपके सद्गुणों का वर्णन किया।

Toll Free No: 180030102131